स्वास्थ्य का तकाज़ा है कि भारतीय सेना ईराक न जाए

डॉ. ओ.पी. जोशी और डॉ. जयश्री सिक्का

अमरीकी आव्हान के बावजूद भारतीय सेना को ईराक न भेजने का सरकार का निर्णय पर्यावरण एवं जन स्वास्थ्य के संदर्भ में सर्वथा उचित है। युद्ध के कारण ईराक का पर्यावरण तहस-नहस हो चुका है एवं अमरीका यह चाहता है कि इस बिगड़े पर्यावरण का प्रभाव उसकी अपनी सेना के स्वास्थ्य पर न हो। पर्यावरण में सबसे अधिक खतरा निःशेष युरेनियम या क्षरित युरेनियम (डिप्लीटेड युरेनियम) के उपयोग से पैदा हुआ है।

अमरीका परमाणु हथियारों एवं परमाणु ऊर्जा के उपयोग के मामले में दुनिया में सिरमौर है। इसी कारण वहां पर क्षरित युरेनियम भारी मात्रा में एकत्र हो गया है एवं इसे ठिकाने लगाना एक बड़ी समस्या है। अमरीका ने इस समस्या से निजात पाने हेतु इसका उपयोग विभिन्न हथियारों में करना शुरु किया जिससे इसकी एकत्र मात्रा कम हो एवं हथियारों की मारक क्षमता भी बढ़े। पेंटागन के अनुसार अमरीकी सेनाएं इसका उपयोग टैंकों एवं मिसाइलों की बाहरी परत बनाने में कर रही हैं। बमबारी के समय आग से पैदा उच्च ताप के कारण इस परत में उपस्थित क्षरित युरेनियम वाष्पित होकर महीन कणों के रूप में बिखर जाता है। ये कण रेडियोसक्रिय होते हैं एवं 50 कि.मी. तक फैल जाते हैं।

अमरीकी सेना ऐसे टैंकों एवं मिसाइलों का उपयोग ईराक में लगातार कर रही है। एक गणना के अनुसार 800 टन क्षरित युरेनियम सऊदी अरब, कुवैत एवं ईराक की भूमि एवं जल में फैल चुका है। कुछ वैज्ञानिक कहते हैं कि क्षरित या निःशेष युरेनियम नाम ही भ्रामक है क्योंकि उपयोग के बावजूद इसमें घातक तत्व बने रहते हैं। युरेनियम का गुण यह है कि वह सवा चार अरब वर्षों तक सक्रिय रहता है। चिकित्सा शास्त्र के अनुसार क्षरित युरेनियम से ल्यूकेमिया, लिम्फोमा, हड्डी का कैंसर एवं नवजात शिशुओं में विकृतियां पैदा होती हैं।

1991 के युद्ध में 320 अरब ग्राम क्षरित युरेनियम का उपयोग कर अमरीका द्वारा नौ लाख बम भी बनाए गए थे। इन बमों के उपयोग से काफी रेडियोधर्मिता फैली थी एवं लोगों में कैंसर के स्पष्ट लक्षण भी देखे गए थे। खाड़ी युद्ध के बाद बसरा शहर एवं उसके आसपास किए गए अध्ययनों से यह पता चला था कि बच्चों में मुख के कैंसर एवं वयस्कों में रक्त कैंसर में कई गुना बढ़ोतरी हुई थी। इसका कारण क्षरित युरेनियम से पैदा रेडियोधर्मिता ही बताया गया था।

खाड़ी युद्ध के समय क्षरित युरेनियम के उपयोग से जितना मलबा इकट्ठा हो गया था उस पर एक ब्रिटिश पर्यावरणविद् ने कहा था कि इसमें आने वाले समय में पांच लाख लोगों को जान से मारने की क्षमता है। खाड़ी में जिन सैनिकों ने भाग लिया था उनमें भी आगे चलकर स्वास्थ्य की गम्भीर समस्याएं पैदा हुई थीं। उसी समय अवकाश प्राप्त सैनिकों के एक संगठन ने बताया था कि लगभग एक चौथाई सैनिकों में अपंगता से जुड़ी समस्याएं उत्पन्न हुई थीं। इन समस्याओं को 'गल्फ वार सिंड्रोम' कहा गया था। इस सिंड्रोम से मारे गए सैनिकों के शरीर के ऊतक एवं हड्डियों में क्षरित युरेनियम देखा गया था। कुछ चिकित्सकों की मान्यता है कि जिनेटिक रोगों एवं अपंगता का कारण भी हथियारों में प्रयुक्त क्षरित युरेनियम हो सकता है। 1991 के युद्ध के बाद युद्ध से प्रभावित क्षेत्र में जन्म लेने वाले बच्चों में कुछ आंतरिक एवं बाहरी अंगों का विकास ठीक से नहीं हुआ था। अमरीकी सेना में निःशेष युरेनियम परियोजना के पूर्व निर्देशक डॉग रॉकी के अनुसार क्षरित युरेनियम रेडियोसक्रिय है एवं अगले सवा चार अरब वर्षों तक वातावरण को प्रदूषित करता रहेगा। यदि इसे भौतिक रूप से हटाया नहीं गया और सुरक्षित रूप से नष्ट न किया गया तो यह लोगों को बीमार कर देगा। निःशेष युरेनियम के उपयोग का खामियाजा सैनिकों एवं नागरिकों की वर्तमान एवं अगली पीढ़ी को भुगतना होगा। यू.एस. वायुसेना के अनुसार 2003